सादर प्रकाशनार्थ :–

अनुकरणीय

– आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

जार्ज बर्नार्ड शा महान् प्रतिभाशाली, बड़ी ही तीक्ष्ण बुद्धि वाले, गहन चिन्तक थे। जीवन और जगत् के विषय में उनकी दृष्टि बड़ी गहन थी। संसार के बिखरे और उलझे हुए झमेले मे से सत्य और तथ्य को खोज निकालने में वे प्रवीण थे। इसीलिए उनके विचार जानने के लिए लोग बहुत उत्सुक रहा करते थे। कोई भी विषय हो, उस बारे में बर्नार्ड शा क्या कहते हैं, यह सभी जिज्ञासु जानना चाहते थे। एक दिन किसी जिज्ञासु ने उनसे पूछा – 'आप पुनर्जन्म को मानते हैं ?''

'हाँ।' 'तो, यदि आपको पुनर्जन्म में विश्वास है तो पहले तो यह बताने की कृपा कीजिए कि आगामी जन्म में आप किस धर्म में उत्पन्न होना चाहेंगे ?'

'निश्चित रूप से जैन धर्म में।' 'कारण ?' 'इसलिए, कि जैन धर्म प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर बन सकने की संभावना प्रदान करता है। इससे बड़ी कोई बात, किसी धर्म में हो नहीं सकती।'

'आप ठीक कहते हैं, शा साहब ! अब कृपया यह भी बताइये कि आप किस देश में उत्पन्न होना चाहेंगे ?,–जिज्ञासु ने पूछा। 'श्री लंका में।' 'और वह क्यों ?' 'क्योंकि श्रीलंका के निवासियों में भ्रातृ–प्रेम की भावना सर्वोत्कृष्ट है। मनुष्य अन्य मनुष्यों को अपना भाई समझे, उससे अच्छी और कौन सी बात हो सकती है ?'

ये थे जार्ज बर्नार्ड शा के उत्तम विचार धर्म एवं मानवता के विषय में।

पश्चिम की संस्कृति में पले, पूर्णतः शाकाहारी इस महान् विचारक के विचार हम पूर्व के लोगों के लिए भी अनुकरणीय हैं।

बापू की बात

– आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

विलायत में जब महात्मा गांधी थे तब तक वे विश्व–प्रसिद्ध हो चुके थे। उनके विचारों का मूल्य था। कार्यों का महत्व था। एक दिन एक छात्र ने उनसे पूछा–'बापू ! आप शराब पीने वाले आदमी से घृणा करते हैं ? बापू ने उत्तर दिया–'बुराई शराब में है। आदमी में नही। इसलिए घृणा शराब से होनी चाहिए, आदमी से नहीं। घृणा दुर्गुण से होनी चाहिए।'

एक दिन एक आदिवासी जो प्रायः समुद्र तट पर आजीविका की खोज में घूमता–फिरता था, अमेरिकन अधिकारियों के सामने उपस्थित हुआ। उसने वह जैकेट अधिकारियों के सामने टेबिल पर रख दी और कहा – 'कृपया देख लीजिए। इसमें की वस्तुएं सही–सलामत हैं कि नहीं।' अधिकारियों ने जैकेट की जेबें उलट कर देखों। उनमें से जगमगाते हुए हीरे टेबिल और फर्श पर बिखर गये।यह देखते ही वह आदिवासी जैसे आया था पलटकर वैसे ही चल पड़ा– निर्लोभ, निरपेक्ष और असंग।

अधिकारियों ने उसे रोककर उसका नाम–धाम जानना चाहा, उसे पुरस्कार दना चाहा। किन्तु वह आदिवासी ठहरा नहीं। चलता ही बना। क्या करना था अब उसे वहां ठहरकर ? वे ठीकरे ही उसे यदि चाहिए होते तो वह हीरे ही फिर क्यों लौटाता ? उसे कुछ नहीं चाहिए था। जो कुछ उसके पास था, वह तो बड़े–बड़े संसार त्यागी संन्यासी–साधुओं के पास भी नहीं होता शायद। उसके पास संतोष, निर्लोभ तथा अस्तेय की महामूल्यवान निधि जो थी !

उस निधि के समक्ष चांदी के चन्द ठीकरों की क्या विसात ?

डाक्टर

– आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

सौराष्ट्र के किसी नगर में एक डाक्टर थे। उनका स्वभाव आजकल के अधिकांश डाक्टरों के स्वभाव से थोड़ा भिन्न था। वह भिन्नता, स्वभाव–भेद क्या था, यह हम आपको बताना चाहते हैं। एक दिन उन डाक्टर साहब के पास किसी गांव का कोई आदमी आया और बोला – 'एक रोगी को देखने के लिए कृपया मेरे गांव तक चलिये, डाक्टर साहब ! हम उस रोगीं को ला नहीं सके।' डाक्टर ने नियमानुसार कहा–'गांव जाकर रोगी को देखने की मेरी फीस दस रुपये है। आप फीस लाये हैं ?'

'फीस लाया तो नहीं हूं, लेकिन गांव चलकर आपकी फीस चुका दी जायेगी।' –आगन्तुक ने कहा।

डाक्टर रोगी को देखने चले गये। रोग–परीक्षा करने पर प्रतीत हुआ कि मरीज को क्षय रोग है। डाक्टर ने पूछताछ की कि अब तक क्या इलाज किया गया है, कौन–कौन सी दवाइयां दी गई हैं–इत्यादि। उसके बाद डाक्टर ने कहा –'चिंता करने की कोई बात नहीं है। ठीक इलाज लेने से, दवा–इंजेक्शन आदि देने से और अच्छा पौष्टिक आहार, जैसे दूध, घी, फल आदि देने से रोगी ठीक हो जायेगा।' तब मरीज की पत्नी ने कहा–'डाक्टर साहब ! आप जरा देर बैठें, मैं अभी आती हूँ।' डाक्टर ने देखा कि वह स्त्री अपने हाथ में कोई चीज छिपाये घर से बाहर जाना चाह रही थी। उन्होंने पूछ ही लिया–'आपके हाथ में यह क्या है और आप कहां जा रही हैं?'

उस स्त्री ने सच–सच बात बता दी–डाक्टर साहब । ये मेरे पति दो महीने से काम पर नहीं जा सके हैं कि ये बीमार हैं। अतः घर में अब कुछ भी रुपया पैसा बचा नहीं है जो कुछ भी थोड़ा–बहुत था, अब तक इलाज वगैरह में खर्च हो चुका। अब तो......अब तो मेरे पास केवल ये सोने की दो चूड़ियां बची हैं। इन्हें बेचकर अभी आमी हूँ और आपकी फीस तथा दवाई वगैरह के लिए रुपये का इन्तजाम करती हूँ।'

यह सुनकर डरक्टर के ह्रदय को आघात लगा। उसने कहा–बाई ! तुम बैठ जाओ। चूड़ियां बेचने की जरूरत नहीं है। दवाइयां मेरे अस्पताल से मँगवा लेना। और.........'' कहते हुए उन्होंने जेब से थोड़े रूपये निकाले और उन्हें उस महिला को देते हुए कहा–''इन रुपयों को देते हुए कहा–''इन रुपयों को अपने पतिदेव के लिए दूध–फल आदि के नाम में लेना। जब ये ठीक हो जायेंगे तब हिसाब हो जायेगा तब तक तुम चिन्ता नहीं करना।'' डाक्टर ने फीस नहीं ली। अपनी जेब से रुपये भी दिए और दवाइयां भी।

***